कि तेरे एक पग कही तो पहुचेंगे,

जमाने ने भी तुझसे ख़ता जो की है,

मत रुकना राह में आये , हर बाधा से,

वे पत्थर भी तेरी मंज़िल की सीढीयाँ बन जायेंगे,

चाहे तो उफान मारता समन्दर हो,

या हो सायं-सायं करता वनों का झुरमुट,

फिर भी रेत के समन्दर से जज़्बा लेते आना,

क्योंकि वे ही तेरे निशाँ को तेरे पीछे सहेजते है,

हवा के झोंकों ने मस्त समाँ जो बाँधा है,

उसी सरसराहट में तेरी ख़ुश्बू भी बहकी आयी है,

मेरी नसों को अपनी आगोश में लेती रही है, तेरी ख़ुश्बू,

बस एक यही जुस्तजु तो तेरी यादो के साथ मेरी थाती है...